2.5.1 व्यावसायिक निर्देशन का महत्त्व

व्यावसायिक निर्देशन, जैसा कि परिभाषा से स्पष्ट है, व्यवसाय के चयन से आरम्भ होता हुआ व्यवसाय के प्रत्येक चरण एवं घटनाक्रम में आवश्यक है। आज के भौतिकतावादी एवं तकनीकी युग में व्यवसाय ने ऐसे-ऐसे क्षेत्रों में अपने पाँव पसार लिये हैं जिनके बारे में कुछ समय पूर्व तक कल्पना करना भी असम्भव था। आज व्यवसाय का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि उसने धर्म, आध्यात्म और व्यक्तियों के नितान्त व्यक्तिगत जीवन को भी नहीं छोड़ा। पश्चिमी देशों सहित भारत ने भी मानव को संसाधन बनाकर आग में घी डालने का कार्य किया है। ज्यो-ज्यों व्यावसायिकता अपने पांव पसार रही है त्यो-त्यों व्यवसायों से सम्बन्धित जटिलतायें भी बढ़ती जा रही हैं। एक ओर व्यवसायों की संख्या बढ़ने के कारण अवसरों में प्रचुरता आयी है, दूसरी ओर तकनीकी के अत्यधिक विकास ने प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम की मात्रा भी अत्यधिक बढ़ा दी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में निर्देशन के अभाव में व्यक्ति गलत व्यवसाय का चयन कर सकता है तथा उसमें असफल होने के कारण अवसाद का शिकार हो सकता है। ऐसी परिस्थितियाँ तथाकथित मानव रूपी संसाधनों के विकास में बाधक ही बनेंगी। अतः आज व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्त्व पहले की अपेक्षा अत्यधिक बढ़ गया है। व्यावसायिक निर्देशन के महत्त्व की सीमित समय में विषद् चर्चा करना असम्भव है। अतः यहां हम व्यावसायिक निर्देशन के महत्त्व से सम्बन्धित कुछ महत्त्व पूर्ण बिन्दुओं पर संक्षेप में चर्चा करेंगे-

1. **व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार व्यवसाय के चयन में सहायक** -भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न भिन्न प्रकार के व्यक्तिगत गुण पाये जाते हैं, जैसे व्यक्तियों में सहनशीलता, धैर्य, वाक्कुशलता, बाहरी आकर्षक व्यक्तित्व आदि। यदि व्यक्ति को उसके व्यक्तिगत गुणों के अनुरूप व्यवसाय चयन में उपयुक्त निर्देशन दिया जाये तो वह अन्य व्यवसायों की अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन करेगा। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति में समय प्रबन्धन की क्षमता अच्छी है तो वह किसी भी कम्पनी के लिये अच्छा प्रबन्धक साबित हो सकता है। प्रबन्धक के अन्य गुणों का विकास वह व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा कर लेगा।
2. **व्यवसायों की अनेकरूपता के कारण आवश्यक** -तकनीक के विकास के कारण आज व्यवसायों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। आज विशेषीकरण का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यवसायगत बारीकियों के कारण विशेषज्ञता अनिवार्य हो गयी है। अतः बिना उपयुक्त व्यावसायिक निर्देशन के अपनी अपेक्षाओं और सामर्थ्य के अनुकूल व्यवसाय का चयन करना असम्भव कार्य है। साथ ही व्यवसाय के चयन के उपरान्त किसी भी व्यवसाय में सफलता के लिये भी व्यावसायिक निर्देशन अत्यावश्यक है।
3. **व्यवसाय एवं व्यक्ति की प्रकृति में समानता की खोज** -प्रत्येक व्यवसाय प्रत्येक व्यक्ति के लिये नहीं बना। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति किसी व्यवसाय विशेष में ही सफल हो सकता है क्योंकि जब तक व्यवसाय एवं व्यक्ति की प्रकृति समान

Scanned with CamScanner

जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं कि मानव स्वयं को जीव जगत का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानता है। अतः उसे अन्य किसी भी प्राणी की अपेक्षा विशेष प्रशिक्षण की अत्यधिक आवश्यकता होती है। अपने से अधिक योग्य एवं सक्षम व्यक्ति के द्वारा कठिन परिस्थितियों में उचित मार्गदर्शन निर्देशन के अन्तर्गत आता है किन्तु यही निर्देशन जब व्यक्ति के भीतर छिपी हुयी किसी मेधा एवं सामर्थ्य को खोजकर उसके उचित एवं श्रेष्ठतम उपयोग करने के लिये प्रदान किया जाता है तथा व्यक्ति उससे जीवन निर्वाह के साथ-साथ आत्मसन्तोष भी प्राप्त करता है तब यह व्यावसायिक निर्देशन कहलाता है।

व्यावसायिक निर्देशन का अर्थ

व्यावसायिक निर्देशन किसी भी छात्र के भावी जीवन से सम्बन्धित है। वस्तुतः आधुनिक परिप्रेक्ष्य में किसी भी छात्र के शिक्षा ग्रहण करने का उद्देश्य अन्ततः जीविकोपार्जन की तैयारी करना होता है। वर्तमान में तो शिक्षा की इतनी शाखायें, व्यवसाय के इतने क्षेत्र तथा अनेक प्रकार के विज्ञापन शैक्षिक क्षेत्र में हैं कि छात्र दिग्भ्रमित हो जाता है। वह निश्चय ही नहीं कर पाता कि किसका चयन करे और किसका नहीं।

जब से मानव को संसाधन मानने का प्रत्यय आरम्भ हुआ है, तब से प्रायः व्यावसायिक निर्देशन का अर्थ यह लगाया जाता है कि इसके माध्यम से व्यक्ति उपयुक्त व्यवसाय का चयन कर सकता है; जबकि व्यावसायिक निर्देशन स्वयं में इससे अधिक व्यापक अर्थ को संजोये हुए है।

वस्तुतः व्यावसायिक निर्देशन प्रारम्भ में निर्देशन से ही सम्बन्धित था। 1932 ई0 में संयुक्त राज्य अमेरिका में व्हाइट हाउस में बाल स्वास्थ्य एवं सुरक्षा विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में व्यावसायिक निर्देशन को परिभाषित किया गया था – "व्यावसायिक निर्देशन व्यक्ति को व्यवसाय के चुनाव, उसके लिये तैयार होने, उसमें लगने एवं उन्नत करने में सहायता करने वाली प्रक्रिया है"

Scanned with CamScanner

व्यावसायिक निर्देशन की परिभाषा Definition of Vocational Guidance

व्यावसायिक निर्देशन को परिभाषित करने के लिए हमें कतिपय विद्वानों को उद्धृत करना होगा। किन्तु उससे भी पहले यहां पर हम National Vocational Guidance Association U.S.A. द्वारा 1987 में दी गयी परिभाषा को उद्धृत करेंगे।

"Vocational guidance is the process of assisting the individual to choose an occupation, prepare for it, enter upon and progress in it."

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा व्यावसायिक निर्देशन को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "व्यावसायिक निर्देशन किसी व्यक्ति विशेष को दी जाने वाली वह सहायता है जिसके माध्यम से वह व्यववसाय के चयन एवं विकास से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करता है एवं अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं को बनाये रखते हुए व्यवसाय से सम्बन्धित अवसरों को प्राप्त करने का प्रयास करता है"

"व्यावसायिक निर्देशन व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवसाय के अवसरों के साथ उनके सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति को व्यवसाय के वरण एवं उसकी प्रगति में आने वाली समस्याओं के सुलझाने में प्रदान की जाने वाली सहायता को कहते हैं"

डोनाल्ड सुपर "किसी व्यक्ति को अपने एवं व्यवसाय जगत के बीच अपनी भूमिका का संपर्याप्त चित्र बनाने एवं उसे स्वीकारने, वास्तविक स्थिति के बीच इस अवधारणा की जांच करने एवं उसे स्वयं के संतोष एवं समाज के लाभ हेतु वास्तविकता में बदलने की सहायता प्रदान करने को व्यावसायिक निर्देशन कहते हैं"

मेसर्स "शैक्षिक निर्देशन किसी व्यक्ति को व्यवसाय में समायोजन करने, मानव शक्ति का प्रभावी उपयोग करने में सहायता करने वाली तथा समाज के आर्थिक विकास को सुगम बनाने वाली एक प्रक्रिया है"

क्रो एण्ड क्रो "व्यावसायिक निर्देशन की व्याख्या सामान्यतः शिक्षार्थी को व्यवसाय का चयन, तैयारी, एवं विकास करने वाली प्रक्रिया के रूप में की जाती है"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर व्यावसायिक निर्देशन को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि "व्यावसायिक निर्देशन व्यक्ति को अपनी रुचि, योग्यता, आवश्यकता एवं सामर्थ्य के अनुसार व्यवसाय का चयन करने में सहायता करने से आरम्भ होता है तथा व्यवसाय से सम्बन्धित समस्त समस्याओं के समाधान, व्यवसाय, व्यवसायगत परिवर्तन एवं व्यवसाय से सम्बन्धित प्रत्येक कार्य में सहायता पर्यन्त चलता रहता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि निर्देशन का वह प्रकार जो किसी भी रूप में व्यवसाय से सम्बन्धित है, व्यावसायिक निर्देशन कहलाता है"

Scanned with CamScanner

नहीं होगी, तब तक व्यक्ति को सम्बन्धित व्यवसाय में सफलता नहीं मिलेगी। उदाहरण के लिये शिक्षण का व्यवसाय करने वाले व्यक्ति में वक्तृत्व कला (बोलने की कला) एवं अध्ययनशीलता का गुण होना अनिवार्य है। इसी प्रकार तकनीकी रुचि रखने वाले विद्यार्थी को इंजीनियरिंग का व्यवसाय अपनाना चाहिये। समान प्रकृति के व्यक्ति एवं व्यवसाय को खोजने का काम व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा ही सम्भव है।

4. **व्यक्ति की रुचि एवं क्षमता के अनुरूप व्यवसाय का चयन** -जैसा कि हम ऊपर भी कह चुके हैं, प्रत्येक व्यक्ति किसी भी व्यवसाय में सफल हो जाये यह आवश्यक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप व्यवसाय का चयन करना अनिवार्य होता है। उदाहरण के लिये शिक्षण कार्य (व्यवसाय के लिये) करने वाले व्यक्ति की प्रकृति बहिर्मुखी होनी चाहिये। किन्तु केवल बहिर्मुखी प्रकृति का स्वामी शिक्षण व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर ले यह अनिवार्य नहीं है। अपितु उस व्यक्ति में शिक्षक बनने की क्षमता भी होनी चाहिये। इतना ही नहीं शिक्षण व्यवसाय के प्रति रुचि का अभाव भी व्यक्ति को शिक्षण व्यवसाय मे सफल होने से वंचित कर देगा। अतः व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से हमें व्यक्ति को उसकी क्षमता एवं रुचि के अनुरूप व्यवसाय चयन करने का अवसर मिलता है।

5. **आत्म संतुष्टि** - युवा वर्ग प्रायः आकर्षक वेतन को आधार बनाकर ही व्यवसाय का चयन कर लेते हैं। निश्चित रूप से वे भरपूर वेतन भी प्राप्त करते हैं। किन्तु अपने व्यवसाय से असंतुष्ट होने के कारण वे कभी भी स्वयं को सुखी अनुभव नहीं करते और अन्ततः अवसाद के शिकार हो जाते हैं। किसी भी व्यवसाय में आर्थिक सम्पन्नता, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं संसाधनों की प्रचुरता के साथ-साथ आत्मसंतुष्टि का होना भी अनिवार्य है। यही आत्मसंतुष्टि का भाव अवसाद से हमारी रक्षा करता है। हमे किस व्यवसाय में आत्मसंतुष्टि मिलेगी यह केवल व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा ही सम्भव है।

6. **संसाधनों का अधिकतम उपयोग** -किसी भी व्यवसाय में सफलता का महत्त्व पूर्ण सूत्र है सीमित संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना। किसी भी व्यवसाय में संसाधनों पर किया गया व्यय बाद में आय का सोत बनता है। अतः व्यवसाय विशेष के लिये एकत्र किये गये संसाधन जितने अधिक प्रयुक्त होंगे, उतना ही अधिक लाभ अमुक व्यवसाय से होगा। सीमित संसाधनों के अधिकतम उपयोग की तकनीक व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। समुचित व्यावसायिक निर्देशन प्राप्त व्यक्ति व्यवसाय विशेष के प्रमुख संसाधनों जैसे समय, श्रम, पूंजी, भूमि आदि का अधिकतम उपयोग करना सीख जाता है। इस प्रकार वह अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है।

7. **तकनीकी उपयोग**- वर्तमान युग जटिलता एवं प्रतिस्पर्धा का युग है। इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में जटिलताओं का एक महत्त्व पूर्ण कारण तकनीकी विकास भी है। अधिकांश व्यवसाय किसी न किसी तकनीकी से सम्बन्धित होते हैं तथा तकनीकी ज्ञान के अभाव में

Scanned with CamScanner

पिछड़ने का भय सदैव बना रहता है। व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा हम प्रशिक्षणार्थी को तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराते हैं जिससे वह अपने व्यवसाय से सम्बन्धित तकनीकी का अधिकतम एवं समुचित उपयोग कर सके। इस प्रकार व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से तकनीकी का उपयोग एवं तकनीकी ज्ञान के माध्यम से व्यवसाय विशेष में सफलता का मार्ग खुलता है।

8. **यन्त्रीकरण के कारण आवश्यक** -अनेक विद्वानों की मान्यता है कि वर्तमान युग को कलयुग कहने का कारण 'कल' (मशीन अथवा यन्त्र) का अधिकतम उपयोग है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यह युग मशीनों का युग है। मानव समाज निरन्तर यन्त्रों पर अधिक से अधिक आश्रित होता जा रहा है। हमारी लगभग प्रत्येक क्रिया यन्त्रों के बिना अपेक्षाकृत कठिन प्रतीत होती है। किसी भी दूसरे क्षेत्र की ही भांति व्यावसायिक क्षेत्र में अत्यधिक यन्त्रीकरण हुआ है। विविध यन्त्रों का समुचित उपयोग जाने बिना कोई भी व्यक्ति अपने व्यवसाय में कैसे सफल हो सकता है? व्यावसायिक निर्देशन हमें यन्त्रों का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराता है। व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से हम यन्त्रों का प्रयोग करके सफलता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ जाते हैं।
9. **परिस्थिति परिवर्तन में सहायक** -एक कहावत है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास है। किन्तु व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा इस कहावत को उल्टा किया जा सकता है। व्यावसायिक निर्देशन हमारे अन्दर उस क्षमता का विकास कर देता है कि विपरीत परिस्थितियों कों भी हम अपने अनुकूल बना सकते हैं। एक उदाहरण के द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है –

   एक बार कागज बनाने वाली एक बड़ी कम्पनी में श्रमिकों की गलती के कारण कागज बनाने की सारी प्रक्रिया का पालन न हो सका। भूलवश श्रमिक बने हुए कागज को बिना चिकना किये ही पैक कर गये। विपणन (बिक्री) के लिए पहुंचने पर इस भूल का पता लगा ओर कम्पनी के सामने करोड़ों रुपये के घाटे की समस्या खड़ी हो गयी। किन्तु कम्पनी के प्रबन्धक ने विशेषज्ञों से विचार किया और इस समय ब्लॉटिंग पेपर (स्याही सोख्ता) अस्तित्व में आया। इस प्रकार व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा हम हानि को लाभ में बदल सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल परिस्थितियों में बदला जा सकता है।

2.5.2 व्यावसायिक निर्देशन के उद्देश्य

लेखक के मतानुसार व्यावसायिक निर्देशन के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं-

1. **विद्यार्थी को विभिन्न व्यवसायों से परिचित कराना**- व्यावसायिक निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी को विभिन्न व्यवसायों से परिचित कराना है। व्यावसायिक निर्देशन विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के व्यवसायों से परिचित कराता है जिससे वे अपनी व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर व्यवसायों का चुनाव कर सके।

Scanned with CamScanner